4

कहानियाँ और साझा लेखन

रजनी*

प्राथमिक कक्षाओं में कहानियों का अपना ही महत्व है। कक्षाओं में कहानी वाचन की गतिविधि हमेशा से बच्चों में उत्साह को पैदा करती रही है। कहानियों का महत्व केवल इसलिए ही नहीं हैं कि वे बच्चों को मज़ेदार लगती हैं बल्कि कहनियाँ बच्चों की कक्षा में रुचि को बनाए रखने के साथ-साथ उनकी लिखना-पढ़ना सीखने की प्रक्रिया को भी तेज़ करती हैं। स्कूल में एक प्रशिक्षु के तौर पर पढ़ाने के अपने अनुभवों में मैंने यही पाया कि बच्चे कहानियों की रोचक दुनिया में सैर करते हुए धीरे-धीरे लिखित भाषा के साथ या कहें की प्रिंट के साथ भी अपना रिश्ता बनाने लगते हैं। प्रस्तुत लेख में कहानी 'हाथी की हिचकी' (जेम्स प्रेलेर) के कक्षा में वाचन के दौरान एक कहानी से जुड़ने के कितने तरीके हो सकते हैं, इस पर चर्चा की गई है।

कक्षा तीन में कुल 35 बच्चे थे जिनमें से लगभग 10 बच्चे ऐसे थे जो 'पढ़ना और लिखना नहीं जानते थे' या कहें कि अपनी कक्षा से कम स्तर की पाठ्यपुस्तक भी नहीं पढ़ पाते थे। कक्षा में यह बच्चे सुनी गई कहानियों पर अपनी मौखिक प्रतिक्रिया देते थे परंतु लेखन के समय अक्सर उनका सवाल होता था कि 'मैडम जी हमें लिखना तो आता नहीं तो हम अपनी बात कैसे लिखें?' कक्षा के शुरू के दिनों में अक्सर यह कठिनाई बहुत से बच्चों को होती कि लिखें कैसे? भारतीय कक्षाओं में आमतौर पर बच्चे लिखने को लेकर एक खासी प्रक्रिया के अभ्यस्त होते हैं। उन्हें लगता है कि लिखना मात्र ब्लैकबोर्ड पर शिक्षिका द्वारा लिखी गई बात को हुबहू अपनी कापियों में उतार लेना है। उनके लिए लिखना मात्र किताब में दिख रहे अक्षरों की बनावट की नकल कर लेना है। इन कक्षाओं में लिखने को लेकर यह समझ कि लिखने में अपनी बात का होना भी शामिल होता है प्राय: गायब ही रहती है।

लिखने की प्रक्रिया को लेकर न केवल बच्चे अपितु स्वयं अध्यापकों को भी यह सचेत जानकारी नहीं होती कि लिखने के दौरान हम किसी और की नहीं अपितु अपने मन की बातों और विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं। सबके लिए लिखने का मतलब है, किसी और के द्वारा तय की गई कोई बात जिसे शिक्षकों को ब्लैकबोर्ड पर लिख देना है और बच्चों को उसे ज्यों का त्यों अपनी कॉपियों में नकल कर लेना है। स्कूलों का यह सामान्य परिदृश्य भारत की शिक्षा व्यवस्था में उसके इतिहास और आज का

*छात्रा (पी.एच.डी.), शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

© NCERT not to be republished

बोधन है। बहरहाल वापस आते हैं अपनी कक्षा में, इस कक्षा में भी किसी एक खास तरह से अभ्यस्त बच्चों की यह चुनौती है कि क्या लिखें? और कैसे? इन प्रश्नों का एक हल तो कक्षा के बच्चों में यह विश्वास पैदा करने से हुआ कि लिखने के लिए हमेशा ब्लैकबोर्ड को ताकने की आवश्यकता नहीं है। प्राय: हमें लगता है कि लिखना और पढ़ना दो अलग-अलग प्रक्रियाएँ हैं और बच्चे पहले अक्षर पहचानना सीख जाएँ और लिखित अक्षर को उसकी ध्वनि के साथ मिला कर पहचान पाएँ तभी वह लिखित सामग्री पढ़ने की ओर अग्रसर होंगे। इसलिए स्कूल में लिखने-पढ़ने की शुरुआत वर्णमाला से होती है और भाषा को सीखने का क्रम भी निश्चित होता है जिसमें पहले वर्ण, शब्द, वाक्य और अर्थ को इसी कठोर क्रम में सिखाया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में जो महत्वपूर्ण चीज़ अदृश्य हो जाती है वह है संदर्भ और उससे जुड़े हुए अधिगमकर्ता के अनुभव। प्राय: भाषा सीखने के इस उपागम को *बॉटम-अप* पद्धति कहते हैं। कक्षा तीन में स्कूल के अंतिम एक घंटे के लिए मैं और बच्चे एक साथ मिलकर कहानी कहने और सुनने की गतिविधि के लिए बैठा करते थे। इस गतिविधि की शुरुआत बच्चों से उनकी रुचि की कहानी के चयन पर चर्चा से होती थी। कई बार कहानी के चयन में आपस में एक छोटी-सी बहस भी छिड़ जाती परंतु बाद में जिस कहानी के लिए ज़्यादा बच्चों की सहमति बनती उसे पढ़ा जाता था। कुल दस बच्चों के इस समूह में हम एक गोल घेरा बनाकर बैठा करते थे और कहानी की किताब को लेकर उस कहानी के शीर्षक पर चर्चा से अपने समूह की चर्चा शुरू करते थे। तत्पश्चात वह कहानी बच्चों को पूरे हाव-भाव से सुनाई जाती थी। कहानी सुनाने के दौरान सबसे ज़रूरी रहता था कि कहानी के चित्रों और शब्दों के बीच में एक तालमेल रखना। इसके साथ ही चित्र को देख कर कथा को रोकते हुए आगे की घटनाओं पर अंदाज़ लगाना। लिखित अक्षरों की वाचिक ध्वनि के साथ तादात्म्य बैठाते रहना। कहानी पूरी होने के उपरांत बच्चों से उस कहानी पर उनकी राय को जानना और उनके द्वारा कहानी पर दी गई प्रतिक्रिया को कहे अनुसार लिखना। इस पूरी प्रक्रिया को कक्षा में की गई एक गतिविधि के माध्यम से और बेहतर समझा जा सकता है जिसका विवरण नीचे दिया गया है

रोज़ की तरह कक्षा में सभी बच्चे घेरा बना कर बैठे थे। उस दिन कक्षा में 'हाथी की हिचकी' कहानी का वाचन होना तय हुआ। चूँकि, इस कहानी के कवर पेज पर बने चित्र को देख कर सब समझ गए थे कि कहानी हाथी की है। सबसे पहले चर्चा शुरू होती है कहानी के कवर पेज से। कहानी के कवर पेज को दिखाते हुए मैंने बच्चों से पूछा, "इस चित्र को देख कर क्या लगता है कि कहानी में क्या है? यह कहानी किसके बारे में होगी? क्या होगा इस कहानी में? इस पर ज़रा आप कुछ बताएँ"

"मैडम यह कहानी जंगल के बारे में है।", "मैडम यह कहानी हाथी के बारे में है।", "मैडम इसमें हाथी परेशान लग रहा है।" आदि-आदि जवाब बच्चों से आए।

इस तरह यह कहानी बच्चों द्वारा लगाए अंदाज़ से शुरू होती है "जंगल के सभी जानवर

© NCERT not to be republished

सो रहे थे ...बस हाथी को छोड़ कर।" इस कहानी में बीच-बीच में चित्र दिखाकर या अगला पृष्ठ बदलने से पहले मैं बच्चों से पूछती कि अब क्या हुआ होगा? बच्चे कहानी पर अपना अंदाज़ लगाते जाते और अपने अंदाज़ को सही होते देखने के लिए पूरे उत्सुकता से कहानी को आगे सुनते। कहानी के पूरा होने के बाद मैंने बच्चों से पूछा, "उन्हें इस कहानी में सबसे ज़्यादा क्या पसंद आया और क्या नहीं?" इस पर बच्चे कहानी की घटनाओं के बारे में बताते। इसके साथ ही कई बार इस तरह का सवाल भी उन्हें दिए जाते कि वे अगर इस कहानी में कोई पात्र बनते तो कौन-सा और फिर वे क्या करते। बच्चे अपने-अपने पसंदीदा पात्र को चुन लेते और फिर कहानी में आई घटनाओं को जीने लगते और समस्याओं को सुलझाने लगते। इस पूरे प्रक्रम में मेरी यह भूमिका रहती कि बच्चे अपने लिए जो पात्र चुन रहे हैं और जो हल बता रहे हैं उस सबको उनके नाम सहित ब्लैकबोर्ड पर लिखती रहूँ जिससे बच्चे अपने द्वारा कही बात के लिखित प्रतिरूप को देख पाएँ और मौखिक व लिखित भाषा के बीच संबंध बना पाएँ। इस तरह एक ही कहानी को जब तक बच्चे चाहते तब तक दो या तीन बार पढ़ा जाता और फिर उनसे उस कहानी पर अपनी बात लिखने के लिए कहा जाता। अपने मन की बात लिखने के लिए वह चित्रों की मदद भी ले सकते थे। इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों के लेखन में जो ज़रूरी अवलोकन मुझे मिले वे यह कि बच्चे कहानी के पात्र का नाम या वह पात्र कौन था, उस शब्द को ज़्यादातर बच्चे पहली बार में ही सही लिखते थे। जैसे इस कहानी में बच्चे 'हाथी' शब्द को अपने आप बिना किसी की मदद के पढ़ पा रहे थे, इसी तरह वह 'हिचकी' शब्द को भी अपने आप पढ़ पा रहे थे। इसी के साथ वह इन दोनों शब्दों को स्वयं से बिना देखे लिख भी पा रहे थे। इसके साथ ही ब्लैकबोर्ड के नीचे मैंने बच्चों के लिखने के लिए एक कोना बनाया था जहाँ वह अपने मन से कहानी के बारे में लिख सकते थे।

इस तरह की गतिविधियों के बाद कुछ इस तरह के अवलोकन भी मेरे सामने आए कि बच्चे समूह में साझे रूप से पढ़ी गई कहानियों को खुद से पढ़ते थे। वे उन कहानियों की किताबों को उनके शीर्षक व चित्र से पहचान कर अपने लिए चुनते थे। इसके साथ ही सुनी गई कहानियों की स्मृतियों से वह लिखे शब्द का अनुमान लगाते और लिखित शब्द की ध्वनियों की समझ भी बनाते। वह लिखने के लिए तय की गई जगह पर अपना सीखा गया नया शब्द भी लिखते, जैसे— बिल्लियाँ, चूहा, पेंसिल, भालू व हाथी इत्यादि। कक्षा की अन्य घंटियों में भी यह प्रक्रिया चलती रहती। इस प्रकार, जहाँ एक ओर कक्षा में पढ़ने-लिखने का यह सकारात्मक माहौल बन रहा था, वहीं बच्चों में आपसी सौहार्द्र दिखाई देने लगा था। अब वे पढ़ने-लिखने में एक-दूसरे की सहायता भी कर रहे थे।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि कहानियाँ न केवल कक्षा में बच्चों को रोचक लगती हैं बल्कि वह लिखने-पढ़ने के प्रति भी उनमें रोचकता को बढ़ाती हैं। कहानियाँ बच्चों में सुनने के कौशल को मज़बूत करती हैं व कहानी में अंदाज़ा लगाने, कल्पना करने, समस्या के लिए नए हल खोजने के

© NCERT not to be republished

साहसिक काम को करने का उत्साह भी प्रदान करती हैं। इसके साथ ही सुनी गई कहानियों पर लिखने की प्रक्रिया में बच्चे लिखित और वाचिक भाषा के साथ एक रिश्ता भी बनाते हैं जो कि बच्चों के लिए लिखने की खासी जटिल और अमूर्तन प्रक्रिया को जीवंत और मूर्त बनाती है।

संदर्भ

कुमार, कृष्ण. 2004, *शैक्षिक ज्ञान का वर्चस्व*. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.

कुंवर,निधि. 2013. *राइटिंग इन इंडियन क्लासरूम: मिसिंग वॉइसेस एंड रिफ्लेक्शन*. लैग्वेज लर्निंग एंड टीचिंग. अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, बंगलुरु.

पी, डेविड पियर्सन. 2013. *हैण्डबुक ऑफ़ रीडिंग*. http://books.google.co.in/books/about/handbook-of-Reading-Research. html?id=4h6HDQAAQBAJ&printsec=frontcover&source=kp_read_button&redir_esc=y से प्राप्त।

© NCERT not to be republished